16

कलीसिया में प्रवेश करना

कुछ वस्तुएं महंगी होती हैं, परन्तु वास्तव में मूल्यवान नहीं होती जैसे अच्छे कपड़े; कुछ वस्तुएं सस्ती होती हैं परन्तु बहुमूल्य होती हैं जैसे सूर्य का प्रकाश या वर्षा; कुछ वस्तुएं बहुत महंगी और बहुत मूल्यवान होती हैं, इस कारण मसीह की कलीसिया भी इसी श्रेणी में आती है।

कलीसिया की अमूल्य कीमत के बारे में नया नियम कोई संदेह नहीं रहने देता। इसका मूल्य कम से कम तीन तरह से दर्शाया जाता है: पहले, हम इसका मूल्य *इसके ईश्वरीय स्रोत* में देखते हैं। स्वर्ग की अनन्त सभा में इसकी योजना बनी और उद्देश्य तय हुआ (इफिसियों 3:10,11), और पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई से इसे तैयार किया गया (मत्ती 4:17)। यह ईश्वरीय दूरदर्शिता थी, न कि भूल का अनुबोध। दूसरा, *इसके बहुमूल्य दाम* में इसका महत्व दिखाई देता है। पौलुस द्वारा हमें बताया गया है कि इसे मसीह के लहू से खरीदा गया था (प्रेरितों 20:28)। मसीह की मृत्यु का मूलभूत उद्देश्य कलीसिया को अस्तित्व में लाना था। यदि खरीद मूल्य से कीमत का पता चलता है, तो मसीह के लहू से खरीदी होने के कारण, कलीसिया, निश्चित ही पृथ्वी की सबसे अधिक मूल्यवान जमायत है। तीसरा, इसका मूल्य इसकी कीमत से देखा जाता है। मसीह ने हमसे आग्रह किया कि अन्य सभी वस्तुओं से बढ़कर स्वर्ग के राज्य की खोज करें। उसने कहा, ''फिर स्वर्ग का राज्य एक व्योपारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया'' (मत्ती 13:45, 46)। उसने न केवल कलीसिया को बहुमूल्य मोती कहा, बल्कि उसने इसे सब मोतियों से मूल्यवान कहा!

कलीसिया के इस अत्यधिक महत्व से पता चलता है कि नये नियम की कलीसिया

की अवहेलना करना भयंकर भूल होगी। यदि एक करोड़पति कलीसिया को नहीं ढूंढता और उसमें प्रवेश नहीं करता तो वह एक अनाथ की तरह है। कलीसिया के बाहर रहने वाला सबसे बड़ा व्यक्ति सबसे छोटा बन जाता है।

कलीसिया के महत्व के स्पष्ट प्रकाश में बुद्धि आदेश देती है कि हम गम्भीरतापूर्वक पूछें, ''कलीसिया में प्रवेश कैसे करते हैं?'' शायद इससे बड़े प्रश्न पर विचार ही नहीं किया जा सकता। आइए इस प्रश्न का उत्तर नये नियम में से ढूंढने के लिए अपने आपको अर्पित कर दें।

उत्तर की घोषणा

मसीह अच्छी तरह जानता था कि पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के बाद उसके स्वर्ग में वापस जाने के बाद उसके चेलों को क्या करना चाहिए। उसकी आज्ञा के तीन पर सम्पूर्ण विवरण नये नियम में दर्ज किए गए हैं (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46, 47)। इन विवरणों के महत्व का अतिमूल्यांकन नहीं किया जा सकता। उनमें सारे मसीही युग के लिए मसीह के चेलों को उसकी अगुआई है।

मसीह ने पहले यह कहते हुए कि, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो'' (मरकुस 16:15) अपने चेलों को विश्वव्यापी कार्य दिया। दूसरा, उसने वे शर्तें स्पष्ट कीं जिनके आधार पर सुसमाचार का प्रचार करते हुए उद्धार को प्रस्तुत किया जाना है। उसने अपने चेलों को बताया कि क्या करना है- ''जाओ'' और उसने उन्हें यह भी बताया कि क्या कहना है ''सुसमाचार का प्रचार करो।'' ''जाओ'' और ''सुसमाचार'' शब्द से उसने उनके भावी काम को संक्षेप में बता दिया।

मरकुस के अनुसार, एक समय, मसीह ने आज्ञा दी और विश्वास करने की शर्त पर ज़ोर दिया। उसने कहा, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार का प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:15, 16)। महान आज्ञा के इस पद में बपतिस्मे का स्पष्ट उल्लेख किया गया है, परन्तु लगता है कि ज़ोर विश्वास पर दिया गया है।

लूका के अनुसार मसीह ने एक और समय पर आज्ञा दी और मन फिराव पर ज़ोर दिया। उसने कहा, ''यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं

में से जी उठेगा। और यरूशलेम[1] से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाएगा'' (लूका 24:46, 47)। मन फिराव, जो कि पाप से परमेश्वर की ओर मुड़ना है, मसीही युग के सुसमाचार प्रचार में मुज़्य बात होनी थी।

मत्ती ने मसीह को गलील के पहाड़ पर आज्ञा देते हुए दिखाया है, जहां उसने बपतिस्मे पर ज़ोर दिया। उसने कहा, ''कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुज़्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुज़्हारे संग हूं'' (मत्ती 28:18-20)।

फिर तो, स्पष्ट है, कि उद्धार के लिए तीन शर्तें दी गई हैं- विश्वास, मन फिराव, और बपतिस्मा; हमारे उद्धारकर्त्ता के द्वारा इन में से हर एक को एक-एक करके चुना गया है और महान आज्ञा के तीनों वृत्तांतों में इन पर ज़ोर दिया गया है।

ये तीनों शर्तें स्पष्ट हैं और आसानी से समझ आने वाली हैं। इन शर्तों को मानने और प्रजु की योजना में उनके महत्व को पहचाने बिना कोई भी यीशु की आज्ञा को गज़्भीरता से नहीं ले सकता। वे प्रभु के राज्य अर्थात कलीसिया में प्रवेश की शर्तें हैं। सारा मसीही युग इन्हीं से संचालित होना है।

उत्तर का विस्तार

उद्धार की शर्तें स्पष्ट रूप से केवल नये नियम में ही नहीं दी गईं, बल्कि उन्हें प्रेरितों के काम में भी स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है।

उदाहरण के लिए, यह पुस्तक कलीसिया की स्थापना की रोमांचकारी कहानी के साथ आरज़्भ होती है। प्रेरितों 2 में लोगों की भीड़ जिसने पतरस के प्रवचन पर विश्वास किया था चिल्ला उठी, ''हम क्या करें?'' यीशु में विश्वास ने उन्हें चिल्लाने को तत्पर किया था! पतरस ने उन्हें मन फिराने और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी (प्रेरितों 2:38)। उस दिन तीन हज़ार लोगों ने बपतिस्मा लिया (प्रेरितों 2:41)। इस कारण, प्रेरितों 2:47ख कहती है, ''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उन में मिला देता था।'' जिस जमायत में वे मिलाए गए थे उसे बाद में कलीसिया कहा गया (प्रेरितों 5:11)। हमारे प्रभु ने, अपनी अन्तिम आज्ञा में, विश्वास

(प्रतीति), मन फिराव और बपतिस्मा लेने को उद्धार प्राप्ति के लिए स्पष्ट शर्तें बताया। जिन लोगों ने पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया में प्रवेश किया था, उन्होंने इन तीन शर्तों का पालन किया।

एक और उदाहरण प्रेरितों 8 में मिलता है। प्रेरितों 8 के अन्तिम भाग में फिलिप्पुस को एक स्वर्गदूत के द्वारा बताया गया कि वह और प्रचार के लिए दक्षिण की ओर जाए (प्रेरितों 8:26)। एक निश्चित स्थान पर, फिलिप्पुस ने उस मार्ग से कूश देश के एक खोजे को रथ में जाते देखा (प्रेरितों 8:27, 28)। वह धार्मिक व्यक्ति था, परन्तु अभी मसीही नहीं था। पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस को निकट जाकर उसके साथ हो लेने का निर्देश दिया (प्रेरितों 8:29)। उसकी ओर दौड़ते हुए, उसने पाया कि वह मनुष्य यशायाह की पुस्तक पढ़ रहा था परन्तु जो वह पढ़ रहा था, उसे समझ नहीं रहा था (प्रेरितों 8:31)। फिलिप्पुस ने वहीं से आरम्भ करके जहां से वह पढ़ रहा था मसीह की कहानी उसे खोल कर समझाई (प्रेरितों 8:35)। कोई शक नहीं, कि मसीह के इस संसार में आने और हमारे पापों के लिए मरने के बारे में उसने उसे सब बताया।

मार्ग में जाते-जाते, मसीह की बातें करते हुए, वे एक पानी की जगह पहुंचे। खोजे ने कहा, "क्या मैं बपतिस्मा ले सकता हूं?" क्योंकि मुझे विश्वास है, इसलिए यह उचित था कि उसे बपतिस्मा दिया जाए।[2] उन्होंने रथ रोका और उतरकर पानी में चले गए, और फिलिप्पुस ने खोजे को डुबोया (प्रेरितों 8:38)। बपतिस्मा लेने के बाद खोजा अपने मार्ग पर आनन्द करता हुआ चला गया।

एक बार फिर, उद्धार के लिए हमारे प्रभु के द्वारा अपनी अन्तिम आज्ञा में ठहराई गई शर्तों का पालन किया गया। फिलिप्पुस द्वारा प्रचार करने के परिणामस्वरूप मसीह में विश्वास एक वास्तविकता बन गई (प्रेरितों 8:35, 36)। कूश देश का वह मनुष्य एक धार्मिक व्यक्ति था जो गम्भीरतापूर्वक परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का यत्न कर रहा था, इसलिए मसीह के संदेश के बारे में जो उसके पास फिलिप्पुस लेकर आया था, उसकी स्वीकृति से मन फिराव स्पष्ट नज़र आता है। इस वृत्तांत में प्रेरितों के काम की पुस्तक में बपतिस्मे का वर्णन सबसे अधिक स्पष्ट किया गया है। फिलिप्पुस और खोजा दोनों पानी में उतरे, और फिलिप्पुस ने उसे डुबोया अर्थात बपतिस्मा दिया (पृष्ठ 177 पर शीर्षक "प्रेरितों के काम में मन परिवर्तन के उदाहरण" देखें)।

कल्पना कीजिए कि आप एक राज्य में रहते हैं और राजा को एक व्यक्तिगत मित्र के रूप में जानते हैं। एक दिन, राजा के साथ बातचीत करते हुए, आपको कहा जाता है कि यदि आप उसे बाद में मिलने आओ, तो वह आपके कर माफ़ कर देगा।

आपको इस समाचार से बड़ी खुशी होती है और आप एक माह के भीतर राजा से मिलने का निश्चय करते हैं। अन्ततः यह जानते हुए कि आप के कर माफ़ हो जाएंगे, आप राजा से मिलने जाते हैं। महल में पहुंचने पर आपको बताया जाता है कि राजा तो किसी दूसरे देश की यात्रा पर गया हुआ है। आप महल के द्वारपाल को बताते हैं कि राजा ने आप से कहा था कि यदि आप उसे दोबारा आकर मिलो तो आपके कर माफ़ कर दिए जाएंगे। द्वारपाल कहता है, ''राजा ने आपके लिए विशेष प्रबन्ध किया है।'' वह आपको एक कमरे में ले जाता है जो बारह मंत्रियों से भरा हुआ है। आप उन्हें अपनी कहानी बताते हैं। उत्तर में, वे कहते हैं, ''जब राजा स्वयं यहां था, तो उसके पास कहने मात्र से ही आपको कर माफ़ करने की शक्ति थी, परन्तु अब तो राजा यहां नहीं है। उसने कुछ विशेष शर्तें रख छोड़ी हैं जिससे आपके कर माफ़ किये जाएंगे। पहली, आप अपने घर वापस जाइए; दूसरी, अपनी कहानी एक पत्र में लिखकर दीजिए; तीसरी, उस पर अपने परिवार के सब सदस्यों का नाम लिखिए; और चौथी, तीन गवाहों के बीच उस पत्र पर हस्ताक्षर कीजिए। ये शर्तें पूरी होने पर आपके कर माफ़ हो जाएंगे।''

सचमुच जो मसीह ने किया है, उसके साथ इस कहानी की तुलना कीजिए। जब राजा यहां था, तो वह केवल एक शब्द से ही पाप क्षमा कर देता था। उदाहरण के लिए, उसने क्रूस पर डाकू को क्षमा कर दिया (लूका 23:43)। परन्तु, जब मसीह ने यह पृथ्वी छोड़ने और स्वर्ग जाने की तैयारी कर ली, तो उसने कुछ शर्तें दीं, जिनके आधार पर मसीही युग में लोगों का उद्धार होना था। साथ ही, उसने यह संकेत भी दिया कि उसकी यह आज्ञा जगत के अन्त तक प्रभावी रहेगी (मत्ती 28:20)। अब जब कि राजा गया हुआ है, माफ़ी के लिए उसकी शर्तें ही प्रभावी हैं।

उत्तर का लागू होना

कलीसिया में प्रवेश की ये शर्तें हम में से हर एक पर लागू होनी चाहिए। मसीह की अन्तिम आज्ञा बदली नहीं है। यह आज भी वैसी ही है जैसी दिए जाने के समय थी। उद्धार की शर्तें हमारे लिए भी वही हैं जो उनके लिए थीं, जिन्होंने पतरस के मुख से पहला प्रवचन सुना था। मसीह कलीसिया में प्रवेश की शर्तें तय करता है और इनके द्वारा लोगों को इसमें मिलाता है। मनुष्यों की दलीलें और निर्देश उसकी अन्तिम वसीयत और वाचा को बदलते नहीं। राजा गया हुआ है, और जो शर्तें उसने मसीही

युग के लिए तय की हैं, उनकी पालना की जानी चाहिए।

कलीसिया में प्रवेश के लिए उसकी शर्तों के सम्बन्ध में आप कहां पर हैं? क्या आप विश्वास करते हैं? विश्वास का स्रोत परमेश्वर का वचन है (रोमियों 10:17)। मनुष्य की बुद्धि, शिक्षा, या प्राप्तियां विश्वास पैदा नहीं कर सकतीं; क्या आप परमेश्वर में विश्वास करते हैं? क्या आप विश्वास करते हो कि मसीह उसका पुत्र है और मनुष्यजाति का उद्धारकर्त्ता है? क्या आपने अपने पापों से मन फिराया है (प्रेरितों 17:30, 31)?

क्या आप पाप की ओर से जीवते परमेश्वर की ओर मुड़ गए हो? क्या आपने इस बात की परवाह किए बिना कि यह कहां ले जाता है, परमेश्वर की इच्छा के प्रति अपने हृदय को अर्पित किया है?

क्या आपने खुलेआम लोगों के बीच माना है कि आप यीशु को परमेश्वर का पुत्र और उसे अपना प्रभु मानते हैं (रोमियों 10:10)? क्या आपने अपने होंठों से अंगीकार किया है कि यीशु उद्धारकर्त्ता और प्रभु है?

क्या आपने बपतिस्मा ले लिया है? प्रभु की महान आज्ञा का बपतिस्मा डुबोने से (रोमियों 6:4), मसीह में (रोमियों 6:3; गलतियों 3:27), और पापों की क्षमा के लिए (प्रेरितों 2:38; 22:16), और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में होता है (मत्ती 28:19, 20)। क्या आपने नये नियम के नमूने के अनुसार बपतिस्मा लिया है?

आज जब कोई मसीह द्वारा अपनी अन्तिम आज्ञा की तय शर्तों से जुड़ता है, तो क्या यह विश्वास करना उचित नहीं है कि हमारा सच्चा प्रभु और मुक्तिदाता उसे अपनी कलीसिया अर्थात राज्य में मिला लेता है? प्रभु की शर्तों को नकार कर कोई भी अपने दोष के दण्ड से भाग नहीं सकता। हमें इनके किसी विकल्प या किसी विकार की अनुमति नहीं देनी चाहिए। मसीह के प्रति सच्चा समर्पण तो उसकी आज्ञा का पालन ही होगा।

सारांश

क्या आपने नये नियम की कलीसिया में प्रवेश कर लिया है? क्या आज आप इसमें प्रवेश करना चाहेंगे?

यकीनन ही हमारे लिए सबसे महान और सबसे बड़ा समाचार यह है कि नये नियम की कलीसिया में प्रवेश के लिए दी गई प्रजु की शर्तों को मानकर कोई भी प्रवेश

कर सकता है। सभी देश, सभी जातियां और सभी लोग उसके राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और मसीह में एक हो सकते हैं (इफिसियों 2:14)।

बुद्धि की मांग है कि यह सुनिश्चित करने के लिए हमें आरम्भ से ही शुरू करना चाहिए। यदि आपने उद्धार के लिए प्रभु की शर्तों के अनुसार उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया, तो शीघ्र ही उन शर्तों को पूरा कीजिए। उसके राज्य में प्रवेश कीजिए और केवल उसके राज्य के नागरिक होकर जीवन बिताइए।

मसीह की कलीसिया तब तक आपके लिए सचमुच कोई महत्व नहीं रखती, जब तक आप इसमें प्रवेश नहीं करते।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 242 पर)

1. प्रभु की कलीसिया के अद्वितीय मोल का वर्णन करें।
2. क्या आज मसीहियों पर प्रभु की महान आज्ञा की शर्तें लागू होती हैं?
3. आज हम उस डाकू की तरह क्यों नहीं बचाए जा सकते जो क्रूस पर बचाया गया था?
4. आज कोई कलीसिया का सदस्य कैसे बनता है?
5. क्या उद्धार पाए हुओं को कलीसिया में मनुष्य मिलाते हैं?
6. क्या यह विश्वास करने का कोई कारण है कि, यदि कोई मसीही बनने के लिए वही करता है जो प्रेरितों के काम की पुस्तक में लोगों ने किया, तो परमेश्वर उसके लिए वह नहीं करेगा जो उसने उनके लिए किया जिन्होंने प्रेरितों की पुस्तक में उसकी इच्छा को पूरा किया?
7. कोई कैसे आश्वस्त हो सकता है कि वह मसीह की कलीसिया में है?
8. जब उद्धार के लिए प्रभु की शर्तों को विकृत किया जाता है, तो क्या उससे बहुत हानि होती है?

शब्द सहायता

यीशु की अन्तिम वसीयत और वाचा - नया नियम (इब्रानियों 9:15-17)।

निजी - अलग किया हुआ। पहला पतरस 2:9 मसीहियों के लिए कहता है, ''पर तुम एक चुना हुआ वंश और राज पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो।''

---

[1]कुछ प्राचीन हस्त लेखों में यहां ''और'' के स्थान पर ''के लिए'' मिलता है।

[2]प्रेरितों 8 का पद 37 प्रेरितों की पुस्तक के कई प्रामाणिक लेखों में नहीं मिलता। इससे यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि हो सकता है कि यह पद नये नियम के मूल शास्त्र का भाग न हो। परन्तु यह माना जाना चाहिए, कि इस पद में फिलिप्पुस को उठाया गया। ऐसी परिस्थिति में मुज्य वाक्य उठाया गया बहुत ही स्वाभाविक विचार है। कूश देश का खोजा मसीह के बारे में नहीं जानता था, वह यह भी नहीं जानता था कि भविष्यवक्ता किसके बारे में कह रहा था। फिर मसीह के बारे में केवल एक ही मुलाकात में, खोजे ने बपतिस्मा लेना चाहा। इस कारण यह वाक्य कि, ''यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है'' बहुत ही उपयुक्त है और बपतिस्मे की तैयारी करते समय इसे कभी बाहर नहीं रखा जा सकता। परमेश्वर के पुत्र के रूप में मसीह का अंगीकार विश्वास की पुष्टि है और प्रभु यीशु की महान आज्ञा में वर्णित विश्वास करने की शर्त से ही बढ़ती है।

प्रेरितों के काम में मनपरिवर्तन के उदाहरण					
सुना	विश्वास किया	मन फिराया	अंगीकार किया	बपतिस्मा लिया	उद्धार पाया
यहूदी प्रेरितों 2	''उनके हृदय छिद गए'' (पद 37)	''मन फिराओ'' (पद 38)		''बपतिस्मा ले'' (पद 38); ''बपतिस्मा लिए'' (पद 41)	''अपने पापों की क्षमा'' के लिए (पद 38)
सामरी लोग प्रेरितों 8	''जब उन्होंने ... प्रतीति की'' (पद 12)			''तो लोग ... बपतिस्मा लेने लगे'' (पद 12)	
खोजा प्रेरितों 8	''यदि तू ... विश्वास करता है'' (पद 37)		''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'' (पद 37)	''बपतिस्मा लेने'' (पद 36); ''उसे बपतिस्मा दिया'' (पद 38)	''आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया'' (पद 39)
शाऊल प्रेरितों 9; 22; 26		उपवास और प्रार्थना (9:9, 11)	''हे प्रभु'' (9:5)	''बपतिस्मा लिया'' (9:18); ''बपतिस्मा ले'' (22:16)	''अपने पापों को धो डाल'' (22:16)
कुरनेलियुस प्रेरितों 10; 11	''उस पर विश्वास करेगा'' (10:43)	''जीवन के लिए मन फिराव'' (11:18)		''बपतिस्मा'' (10:47); ''आज्ञा दी ... बपतिस्मा दिया जाए'' (10:48)	''पापों की क्षमा'' (10:43)
लुदिया प्रेरितों 16				''बपतिस्मा लिया'' (16:15)	
लुदिया प्रेरितों 16	''प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर'' (पद 31); ''विश्वास करके'' (पद 34)	''उनके घाव धोए'' (पद 33)		''बपतिस्मा लिया'' (पद 33)	''तू ... उद्धार पाएगा'' (पद31); ''आनन्द किया'' (पद 34)
कुरिन्थी प्रेरितों 18	''विश्वास लाए'' (पद 8)			''बपतिस्मा लिया'' (पद 8)	